- पशुओं को साफ एवं सूखा चारा दें।
- गेहूँ का भूसा एवं धान का पुआल सुरक्षित रखें।
- पशुओं का समय पर टीकाकरण एवं कृमिनाशक दवा दें।
- पशुशाला की नियमित सफाई करें।
- बरसीम, लोबिया एवं चारा घास की खेती करें।

- बरसात में होने वाले रोगों से बचाव हेतु समय पर टीकाकरण करें।
- रहने की जगह को साफ एवं सूखा रखें।
- दाना मिश्रण को नमी से बचाकर रखें।
- सभी पशुओं को कृमिनाशक दवा दें।

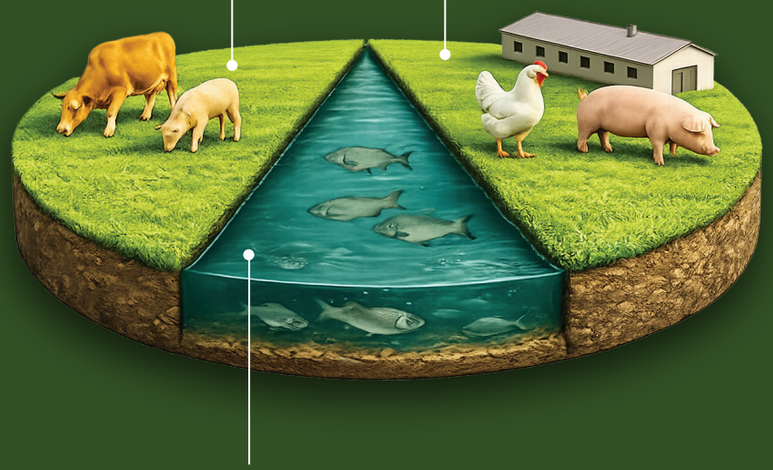

- तालाब में चूना डालकर पानी को स्वच्छ रखें।
- वर्षा जल को तालाब की ओर मोड़ें।
- बड़ी मछलियों को सुरक्षित रखें ताकि प्रजनन हो सके।

किसान की समझदारी ही उसकी सबसे बड़ी ताकत

सही योजना अपनाएँ सुरक्षित खेती करें बेहतर भविष्य बनाएँ

किसान कॉल सेंटर
1800-123-1136, 1800-180-1551
(सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक)

मुख्यमंत्री किसान सहयोग कोषांग
0651-2490542 / 0651-2491642
(सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक)

अधिक जानकारी के लिए

जिला स्तर पर :
जिला कृषि पदाधिकारी / परियोजना निदेशक, आत्मा / जिला भूमि संरक्षण पदाधिकारी / भूमि संरक्षण पदाधिकारी / जिला उद्यान पदाधिकारी / ज़िला पशुपालन पदाधिकारी / जिला गव्य विकास पदाधिकारी / जिला मत्स्य पदाधिकारी / जिला सहकारिता पदाधिकारी / कृषि विज्ञान केन्द्र

प्रखण्ड स्तर पर :
प्रखण्ड कृषि पदाधिकारी / प्रखण्ड तकनीकी प्रबंधक / सहायक तकनीकी प्रबंधक

ग्राम पंचायत स्तर पर :
जनसेवक / कृषक मित्र

Department of Agriculture, Animal Husbandry and Cooperative, Jharkhand | jharkhandagrianimalcoop | AgriJharkhand

annapurnaprinters.mc@gmail.com | 9835 778 101

श्रीमती शिल्पी नेहा तिर्की
माननीय मंत्री
कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता विभाग
झारखण्ड सरकार

झारखण्ड सरकार
GOVERNMENT OF JHARKHAND

श्री हेमन्त सोरेन
माननीय मुख्यमंत्री
झारखण्ड

कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता विभाग, झारखण्ड

बदलते मौसम में सुरक्षित खेती की पूरी जानकारी

राज्य स्तरीय कृषि प्रबंधन प्रसार-सह-प्रशिक्षण संस्थान

समेति झारखण्ड

समेति भवन, काँके रोड, राँची, झारखण्ड
Web: www.sameti.org
E-mail: sametijharkhand@rediffmail.com
sametijharkhand | sameti_jharkhand

क्यों जरूरी है आकस्मिक कृषि योजना?

पिछले कई वर्षों से झारखण्ड में मानसून समय पर नहीं आ रहा है। कभी कम बारिश, कभी देर से बारिश और कभी अचानक सूखे जैसी स्थिति किसानों की खेती को प्रभावित कर रही है। ऐसे समय में सही फसल, सही तकनीक और सही योजना अपनाकर किसान भाई नुकसान को कम कर सकते हैं और अच्छी उपज प्राप्त कर सकते हैं।

यह योजना किसानों को यह समझाने के लिए है कि मौसम की अनिश्चित परिस्थितियों में कौन-सी फसल लगानी चाहिए, खेत की तैयारी कैसे करनी चाहिए और खेती के साथ पशुपालन, मत्स्य पालन एवं बागवानी में क्या सावधानियाँ रखनी चाहिए।

ऊपरी जमीन में धान की खेती कम करें और कम पानी वाली फसलों को प्राथमिकता दें।

खेत में मेड़ बनाकर बुवाई करें ताकि वर्षा जल का संरक्षण हो सके।

अरहर, उड़द, मूंग, मड़ुआ, ज्वार और सोयाबीन जैसी फसलें लगाएँ।

बीज बोने से पहले राइजोबियम कल्चर से बीज उपचार अवश्य करें।

जैविक खाद एवं गोबर खाद का अधिक उपयोग करें ताकि मिट्टी की नमी बनी रहे।

फसल बोने के 15 दिनों बाद खर-पतवार नियंत्रण अवश्य करें।

दलहनी एवं तिलहनी फसल लगाने से पहले खेत में चूना या डोलोमाइट का उपयोग करें।

अगर कहीं पौधे कम उगे हों तो पुनः बुवाई करें।

फसल एवं किस्में

अरहर

उन्नत किस्में – उपास-120, बहार, बिरसा अरहर-1, बिरसा अरहर-2

उड़द

उन्नत किस्में – बिरसा उड़द-1, डब्ल्यू.बी.यू-109, बिरसा उड़द-2

मड़ुआ

उन्नत किस्में – बिरसा मड़ुआ-2, बिरसा मड़ुआ-3, GPU-28, GPU-67

सोयाबीन

उन्नत किस्में – बिरसा सोयाबीन-1, बिरसा सोयाबीन-3, JS-97-52

ज्वार

उन्नत किस्म – CSV-20
ज्वार की खेती से पशुओं के लिए हरा चारा भी उपलब्ध होता है।

मध्यम खेत (दोन-3) के लिए सलाह

अंतरवर्ती खेती अपनाएँ

अनियमित वर्षा की स्थिति में अंतरवर्ती खेती किसानों के लिए लाभदायक होती है।

इससे यदि एक फसल खराब हो जाए तो दूसरी फसल से उत्पादन मिल जाता है।

- कम अवधि वाली धान की किस्मों की सीधी बुवाई करें।
- धान की किस्में – वंदना, ललाट, सहभागी, बिरसा विकास धान-110 एवं 111
- मकई की खेती के लिए उन्नत किस्मों का चयन करें।
- मूंगफली की खेती अनुशंसित विधि से करें।
- खर-पतवार नियंत्रण हेतु समय पर दवा का छिड़काव करें।

निचली जमीन (दोन-1 एवं 2) में धान की खेती

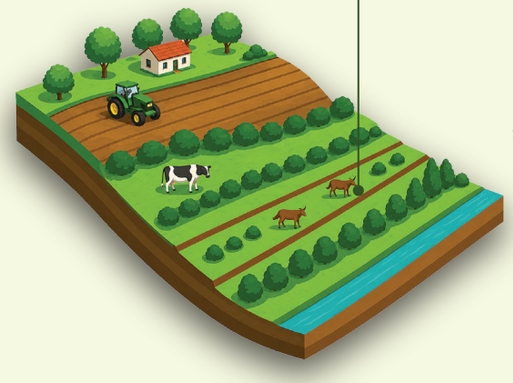

- खेत की अच्छी जुताई कर मेड़ों को मजबूत करें।
- धान की नर्सरी 2-3 किस्तों में तैयार करें ताकि समय पर रोपाई हो सके।
- नर्सरी को जमीन की सतह से थोड़ा ऊपर बनाएं।
- 20-22 दिन का बिचड़ा होने पर रोपाई शुरू करें।
- अधिक उम्र वाले बिचड़े की हल्की छंटाई के बाद रोपाई करें।
- जो किसान श्रीविधि से धान का रोपा नहीं करना चाहते हैं वे 10 से 12 दिनों के बिचड़े में यूरिया का भुरकाव 2 कि.ग्रा. प्रति 100 वर्ग मीटर क्षेत्रफल की दर से करें

सब्जी एवं बागवानी

- बरसाती मौसम में भिंडी, लौकी, करेला, कद्दू, मिर्च एवं अन्य सब्जियों की खेती करें।
- सब्जियों की बुवाई हमेशा मेड़ बनाकर करें।
- खेत में जल निकासी की उचित व्यवस्था रखें।
- फलदार पौधों के आसपास पानी जमा न होने दें।
- खाली जगहों में कम अवधि वाली सब्जियाँ लगाएँ।
- दवा छिड़काव साफ मौसम में करें।